International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 13 Issue 3 || March 2024 || PP. 155-158

'पंचकन्या' उपन्यास में चित्रित सशक्त वूमेनिजम

MS. SUNITA DEVI
Assistant Prof. In Education (Pedagogy in Hindi) Mail ID:- dr.sranga333@gmail.com
Tirupati College of Education, Ratia, Fatehabad (Haryana)

भूमिका.

प्राचीन काल से ही हमारे समाज में स्त्री को पूजनीय माना जाता है ।उसे अपने जीवन की गरिमा को बनाए रखने व सम्मानित जीवन जीने का पूर्णतया अधिकार प्राप्त है। रामायण, महाभारत काल से ही स्त्री को अपने सम्मान की प्राप्ति हेतु संघर्ष अवश्य करना पड़ा है सीता जैसी स्त्री महलों में पलने वाली को राजा जनक के द्वारा शादी के बाद महलों में ही भेजा गया लेकिन कहते हैं भाग्य में जो लिखा है उसको कौन टाल सकता है जिसके चलते सीता ने अपने विवाह के बाद लगभग जीवन जंगलों में भटकते हुए ही बिताया है। लेकिन अपने चरित्र पर किसी भी तरीके की आंच नहीं आने दी तभी तो वर्तमान परिवेश में सीता का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है और हर पुरुष को पत्नी के रूप में सीता जैसी आदर्शवादी पत्नी पाने की इच्छा रहती है हालांकि सीता पर उस समय के दौरान अनेक तरीके के बेबुनियादी आरोप लगाए गए लेकिन कोई भी उन आरोपों को साबित नहीं कर पाया और आधुनिक परिवेश में सीता की छवि बहुत ही उत्तम मानी जाती है।महाभारत में भी स्त्री के अनेक आदर्शवादी रूप हमें दिखाई देते हैं लेकिन इन सभी को मध्य नजर रखते हुए स्त्री के मनोवैज्ञानिक स्वरूप का अध्ययन करना अति आवश्यक है कि क्या वास्तव में स्त्री प्राचीन काल से अपने स्वतंत्र अस्तित्व को बचाए रख पाई या हमेशा ही पितृसत्ता के अधीनस्थ रहकर जीवन यापन किया है 'पंचकन्या' उपन्यास में मनीषा कुलश्रेष्ठ ने स्त्री की मनोदशा को समझने के लिए सबसे उपयुक्त शब्द 'वूमेनिज्म' का प्रयोग किया है उनका मानना है कि एलिस वॉकर का दिया शब्द 'वूमेनिज्म' वह अपने मन के ज्यादा करीब पाती है नारीवाद, स्त्रीवाद, फेमिनिज्म यह सभी वूमेनिज्म के ही पर्यायवाची माने जाते हैं एलिस वॉकर का मानना है "वूमेनिज्म" "इज टू फेमिनिज्म एज पर्पल इज टू लेवेंडर"

प्रभा खेतान के अनुसार "नारीवाद समझ से मेरा आशय है एक आंदोलनकर्ता की हैसियत से व्यक्तिए स्त्री के निजी जीवन को समझनाए उसकी मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक समस्याओं को सुलझाना ताकि वह चुनाव की संभावनाओं से वंचित न रहे"

"मृदुला गर्ग के अनुसार. 'नारीवाद' अंग्रेजी के 'फेमिनिज्म' शब्द का सार्थक अनुवाद नारी चेतना ही है हर वह स्त्री पुरुष फेमिनिस्ट माना जाना चाहिए जो नारी चेतना या दृष्टि से संपन्न हो।" "डॉ रोहिणी अग्रवाल के अनुसार पितृसत्ता

को समझते हुए स्त्री को मनुष्य के रूप में गरिमा देना क्योंकि पितृसत्ता ही स्त्री को पराधीन व वस्तु के रूप में देखती है स्त्रीवाद इसी पराधीनता का विरोध है"

हम वैदिक काल से ही देखते आ रहे हैं कि समाज की प्रगति में स्त्री व पुरुष दोनों का बराबर सहयोग रहा है इन दोनों के बगैर तो सृष्टि पर मनुष्य रूप में जीवन ही संभव नहीं है तो हमें एक दूसरे के महत्व को नकारना नहीं चाहिए। इन दोनों को गहराई से जानने से पहले हमें आधुनिक व पारंपरिक परिवेश में रही नारी के महत्व को जानना व उसके संघर्ष की गाथा को समझना अति आवश्यक हो जाता है पंचकन्या उपन्यास में मनीषा कुलश्रेष्ठ ने प्रदीप भट्टाचार्य का लेख 'पंचकन्या. वीमेन ऑफ सब्स्टेंस को हिंदी में अनुवाद किया है इसके अंतर्गत मनीषा कुलश्रेष्ठ ने रामायण, महाभारत काल की स्त्री की स्वतंत्रताए स्वावलंबिता को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया। आधुनिक परिवेश में स्त्री पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होकर जितनी स्वतंत्रता चाह रही है उतनी स्वतंत्रता उस समय अहिल्या, द्रौपदी, कुंती तारा, मंदोदरी आदि के माध्यम से प्रदीप भट्टाचार्य ने अपने लेख में बतलाई थी इन पांचों कन्याओं के नाम स्मरण से ही महा पाप से मनुष्य को मुक्ति मिलती है ऐसा भट्टाचार्य जी का मानना है उन्होंने एक दोहे के माध्यम से यह स्पष्ट कहा है कि

"अहिल्या द्रौपदी कुंती तारा मंदोदरी तथा पंचकन्या स्वरानित्यम महा पातका नाशका"

देखा जाए तो प्रदीप भट्टाचार्य ने जिन पांच कन्याओं का नाम लिया है वह कन्या न होते हुए वो स्त्रियां है क्योंकि हमारे समाज में कन्या तो उस लड़की को कहा जाता है जिन्होंने शादी नहीं कर रखी हो लेकिन उपन्यास में कन्या के मानदंड कुछ और ही है मनीषा जी का कहना है कि कन्या अपने पिता के घर स्वतंत्र विचरण करती है किसी कार्य के करने या न करने में अपनी सहमति और असहमति व्यक्त करती है वह स्वयं सिद्धा मानी जाती है कन्या होने की नियति में अहिल्या, द्रोपदी से लेकर प्रज्ञा, एडवर्ड, माया सुप्रीना तक बहुत कुछ नया जुड़ता जाता है और बहुत कुछ परंपराएं, मुल्य, नैतिकता आदि की दीवारें ढह जाती है पुराणों के अनुसार पंचकन्या वह हैं जो विवाहित होते हुए भी पूजा के योग्य मानी जाती है जिसमें अहिल्या द्रोपदी कुंती मंदोदरी और तारा को शामिल किया जाता है लेकिन मनीषा कुलश्रेष्ठ की पंचकन्याएं इन पौराणिक नामों से बिल्कुल हटकर है एक प्रज्ञा जो मेहनती और बुद्धिमान पत्रकार है माया अपने कार्य क्षेत्र में संघर्षरत कलाकार है एग्लेस एक फ्रांसीसी नृत्यांगना है जो कि भारत के गुरुकुल में कत्थक सीखने आती है और दूसरी और नागकन्या जो अपने आप में आजादए संघर्ष और खुद के प्रेम में डूबी जीवन को निर्वाह करती हुई अपने पथ पर आगे बढ़ती है मनीषा कुलश्रेष्ठ की नायिकाएं स्वछंद, अपने अस्तित्व की पहचान को बनाए रखने में सक्षम प्रेम और नारी सुलभ चेष्टाओं की डोरी में बंधी हुई नजर आती है यह वूमेनिज्म तो है लेकिन किसी की अतिवाद का शिकार नहीं है यह परंपरावादी वूमेनिज्म के बेहतर स्वरूप का आह्वान करती है जो अलग.अलग वर्ग और परिवेश से होते हुए भी उन्हें एक दूसरे से आपस में जोड़े रखा है पंचकन्या आधुनिक परिवेश की सफल कन्याओं की कहानी है जो आजाद

हैए आत्मनिर्भर है अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक है और वह वूमेनिज्म के विपरीत अधिक व्यावहारिकए स्वाभाविक और स्त्री होने के अहसास को लेकर अधिक सकारात्मक है यह व्यवहारिकता के धरातल पर रहकर अपने संघर्ष को अंजाम देती हुई दिखाई देती है रामायण में बाली की पत्नी तारा के बहुत समझाने पर भी बाली ने अपनी पत्नी की बात नहीं मानी और छल के माध्यम से राम के हाथों मारा गया लेकिन तारा ने अपने पुत्र के राजसिंहासन की रक्षा हेतु स्वयं इच्छा से सुग्रीव के साथ रानी बनकर रहने का निर्णय ले लिया "जब लक्ष्मण किष्किंधा के अंतपुर में अचानक धड़धड़ाते हुए गुस्से में प्रविष्ट हुआ, तब तारा ही थी जिसे सुग्रीव ने क्रोधी शेषनाग के अवतार लक्ष्मण को संभालने के लिए भेजा था। तारा ने लक्ष्मण को अर्धोन्मीलित नेत्रों, अस्थिर चाल, सुंदर कमनीयता से उनके क्रोध को शांत तथा उन्हें अस्त्र विहीन कर दिया उसने कोमलता से उन्हें झिड़का कि वे कामवेग की असीमित शक्ति से अनजान है जो कि बड़े से बड़े ऋषियों की भी नीत डिगा दे जबकि सुग्रीव तो एक किंचित वानर मात्र है"

स्त्री के रूप सौंदर्य का जादू पुरुषों पर हमेशा से ही रहा है प्रज्ञा एवं एग्नेस और माया के अकेलेपन संघर्ष और उसकी अथक जिजीविषा का प्रतीक घ्रामेरे का जीवन संघर्ष है। घ्रामेरे ने अपने जीवन में जीवन की सारी खुशियां बटोरी है सफलता के शिखर को छूने का प्रयास किया है इन्होंने अपने जीवन में दो विवाह, तीन प्रेम किए तीन बेटों की मां बनी और आखिर अनजान प्रेमी से प्राप्त हुई बेटी पवन यार उसको बड़ा किया उसकी भी शादी कर दी और समय से पहले मरने के उपरांत उसे दफनाने का कार्य भी किया उससे पैदा हुई बेटी को अकेले अपने दम पर पाला पोषा लेकिन आखिर में खुद बिल्कुल अकेली ही रही इतना सब संघर्ष करने के बाद भी उन्होंने अपने जीवन को अपने तरीके से जिया इनके जीवन की सूची विशेष पात्र रही है इसी के विपरीत पंचकन्या कहानी में

"हानि की विषयवस्तु 'कन्या' चित्रों में एक सी है अहिल्या के कोई अभिभावक नहीं थे पति. पुत्र दोनों को खो दिया और सामाजिक बहिष्कार भी सहा। कुंती ने भी अपने अभिभावक खोए पति को दो बार खोया एक बार माद्री से विवाह पर, दूसरी बार माद्री की बाहों में मृत पाकर। सत्यवती ने पति खोया और दोनों राजपूत्र भी। मंदोदरी ने भी पति, पुत्र और अन्य उत्तराधिकारी को दिए तारा ने भी पति को खोया द्रोपदी तो अपने पांच पतियों की उपेक्षा पाती रही।उन पांचों की कम से कम एक और पत्नी अवश्य थी उसे अर्जुन कभी पूर्णतः नहीं मिला जिससे कि उसका सही अर्थों में विवाह हुआ"

लेकिन इन सबके बावजूद इन सभी कन्या ने अपने जीवन में वही किया जो इन्हें मंजूर था मनीषा जी ने इन सभी की पीड़ा और अनुभव को बहुत ही गहराई के साथ समझते हुए प्रस्तुत किया है। कहा जाता है कि स्त्री मन की पीड़ा अनुभव को स्त्री से अधिक प्रमाणिक तरीके से अन्य कोई प्रस्तुत नहीं कर सकता। श्रृंखला की कड़िया में महादेवी जी ने कहा है "पुरुष के द्वारा नारी चित्रण अधिक आदर्श बन सकता है किंतु यथार्थ के अधिक समीप नहीं पुरुष

के लिए नारीत्व अनुमान है नारी के लिए अनुभव अतः अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र वह हमें दे सकती है वैसा पुरुष बहुत साधना के उपरांत भी शायद दे सकता है" तारा के बाद रामायण की दूसरी पंचकन्या मंदोदरी जो रावण की पत्नी है उन्होंने अपने पति को सीता के बारे में बहुत समझाया की सीता पर स्त्री है और उसे अपने पति के हवाले कर दो। लेकिन रावण ने मंदोदरी की एक नहीं सुनी और इसका प्रणाम रावण के लिए बहुत ही बुरा रहा। मंदोदरी ने पति की मृत्यु के बाद अपने देवर विभीषण के साथ रहकर स्वयं को राजरानी के रूप में सुरक्षित रखा। ऐसे ही समस्त ब्रह्मांड में अद्वितीय सुंदरी अहिल्या को ब्रह्मा जी ने गौतम ऋषि के यहां सुरक्षित रखने के लिए सौंप दिया और जब वह युवती हुई तो गौतम ऋषि को पत्नी के रूप में दे दिया लेकिन अहिल्या की सुंदरता से इंद्र देवता बहुत ही ज्यादा प्रभावित हुए और गौतम ऋषि की अनुपस्थिति में इंद्र ने अहिल्या से संभोग की इच्छा व्यक्त की और अहिल्या ने भी सब कुछ जानते हुए इंद्र के साथ संभोग किया इससे क्रुद्ध होकर गौतम ऋषि ने अहिल्या को त्याग दिया लेकिन यहां पर अहिल्या अपनी इच्छा को ज्यादा महत्व देते हुए बिना कोई भय के अपने मन की तृप्ति अनिवार्य समझी"

"अहिल्या इंद्र से आकर्षित हुई क्योंकि वह अपने मन का विरोध इस तरह प्रकट करना चाहती थी और इंद्र इस लौकिक कीअतीव सुंदरी के प्रति अपने ऐन्द्रिक लोलुपता की वजह से आकर्षित हुआ यह एक आपसी परस्पर बढ़ावा देता हुआ दूर्निवार आकर्षण था" लेकिन अहिल्या ने यह सब कुछ जानबूझकर किया ₹कुंती अहिल्या की तरह उत्सुक थी। वह दुर्वासा के वरदान को परख कर देखना चाहती थी कि क्या वह सच होगा? सूर्य की चमक से प्रभावित हो तथा उसे मन से ग्रहण कर सूर्योदय के समय वह मंत्रोच्चार से सूर्य को आमंत्रित करती है। सूर्य इंद्र ही की तरह असंतुष्ट नहीं लौटेंगे, यह निश्चत है।वह फुसला और धमका कर विवाह योग्य कुंती को उसके अक्षत कौमार्य को क्षति न पहुंचने देने का वचन देता है और मना करने पर राज्य छीन लेने की धमकी देता है स्वयं की कामना और सूर्य की शक्ति से भय की वजह से जहां कुंती एक और विरोध करती है वही वह मांग करती है कि इस मिलन से जो संतान पैदा हो वह पिता सूर्य के समान ही तेजस्वी हो।"

संदर्भ सूची:-

1. मनीषा कुलश्रेष्ठ, पंचकन्या, पृ. .9 सम्यक प्रकाशन, जनवरी 2018, प्रथम संस्करण
2. प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री पृ.24 राजकमल प्रकाशन, जनवरी 2009, प्रथम संस्करण
3. डॉ फिरोज अहमद, वाग्मय डॉ शशी प्रभा पांडेय, नारीवादी लेखन दशा और दिशा, पृष्ठ संख्या.63
4. डॉ रोहिणी अग्रवाल, इतिवृत्त की संचेतना और सरूप पृष्ठ. 264, आधार प्रकाशन पंचकूला, 2005
5. मनीषा कुलश्रेष्ठ, पंचकन्या, पृष्ठ संख्या 188
6. वही, पृष्ठ संख्या 193
7. वहीए पृष्ठ संख्या, 79
8. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियांए पृष्ठ संख्या 66, लोकभारती प्रकाशन, वर्ष 2008
9. मनीषा कुलश्रेष्ठ, पंचकन्या, पृष्ठ संख्या.190
10. वही, पृष्ठ संख्या.195